INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL

ISSN: 2230-7850
IMPACT FACTOR : 4.1625(UIF)
VOLUME - 6 | ISSUE - 12 | JANUARY – 2017

# अम्बेडकरीवादी लेखक : योगीराज वाघमारे

**डॉ डॉ. मारुती शिंदे**
सहयोगी प्राध्यापक एवं अध्यक्ष,
हिंदी विभाग एवं अनुसंधान केंद्र,
वालचंद कला व विज्ञान महाविद्यालय,सोलापुर.

**प्रस्तावना :–**

शताब्दियों से जारी गतिरोध तोडकर मुक्ति का अहसास करनेवाले दलित-पीडितों के जीवन का चित्र दलित साहित्य के माध्यम से मराठी साहित्य जगत में स्थिर हुआ। स्वातंत्र्योत्तर कालखंड में जो नई वाङ्मयीन प्रवृत्तियाँ एवं प्रतीति साहित्य में अपने पगचिन्ह जमाने लगी , उसमें दलित साहित्य का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। " डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर जी के दर्शन से दलित अनुभव जाग उठा और शताब्दियों का मौन टूट गया। जिनकी इन्सानीयत का इन्कार किया गया उनकी पीडा को अर्थ प्राप्त हुआ। पोथीनिष्ठा, अंधविश्वास, देव एवं दैव शरणता के द्वारा कुचला गया मानवी मन नई विज्ञाननिष्ठ ललकार से सजग हुआ। नवजीवन का अहसास घेरा मुक्त होकर नया आशय अविष्कृत होने लगा। यह नया उदगार था उसी का नाम दलित साहित्य। " ( दलित कथा , संपा. डॉ. गंगाधर पानतावणे ,प्रा.चंद्रकुमार नलगे,दलित कथा काही विचार , पृष्ठ - 6 ) इस दलित साहित्य के एक सशक्त हस्ताक्षर के रूप में योगीराज वाघमारे जी दलित साहित्य जगत में पहचाने जाते हैं। 1970 में उनकी पहली कहानी ' उद्रेक ' अस्मितादर्श में प्रकाशित हुई और दलित साहित्य के अध्येताओं को एक नया रत्न मिला। योगीराज वाघमारे जी की पहचान कराते हुए डॉ. गंगाधर पानतावणे जी कहते हैं - " कुलीन मराठी मिट्ठी का रत्न माने योगीराज वाघमारे। येरमाळा की मिट्ठी से नागसेन वन में आए हुए योगीराज ने अपने साथ बहुत अनुभव लाए थे। उन अनुभवों को सिर्फ गढना था। प्रत्यक्ष अजमाया हुआ ग्रामीण जीवन , देहातों के दु:ख देखे हुए। जिस प्रकार ग्रामशासन में सडे हुए लोग देखे उसी प्रकार इस मवेशीखाने से मुक्ति पाने के लिए छटपटाने वाले लोग भी देखे। अम्बेडकर नाम का सूर्य शहरों की तरह देहातों की झोंपडी-झोंपडी में गया और चिंगारियाँ कैसे भडकी यह वाघमारे जी ने प्रत्यक्ष अजमाया। " ( लेणी , डॉ. गंगाधर पानतावणे , पृष्ठ - 91 ) इन भडकी हुई चिंगारियों में से एक चिंगारी याने स्वयं योगीराज वाघमारे भी है।

मराठवाडा के विद्यार्थियों के लिए औरंगाबाद का नागसेन वन याने उनका तिर्थक्षेत्र है। मिलिंद महाविद्यालय और नागसेन वन का परिसर डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर के पदस्पर्श से पावन और रोमांचित बना हुआ है। इस परिसर की मिट्ठी अपने ललाटपर लगाकर अनेक विद्यार्थी अलग-अलग क्षेत्रों में डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर की सन्निकटता में नागसेन वन का हर कन बौरा गया। इसी मिट्ठी में ही गाँ वगाँ व से पढने की जिद लेकर आए हुए लडके भी अपने जीवन का अर्थ ढूँढने लगे। जिनके पूर्वजों को लेखनी देखने और अक्षर घोटने की मनाही थी, ऐसे घरों से आए हुए लडकों को अब अक्षरों की पहचान हो गई। उन्होंने ज्ञान से दोस्ती की और उन्हें चार दिवारों के बीच की शिक्षा अधूरी लगने लगी। अपने समाज के जीवन का चित्रण इन किताबों में नहीं समाता। उन्हें लगने लगा कि हमारी दुनिया ही अलग है। इसी अस्वस्थता से ही फिर अपने जीवनानुभवों कों शब्दों के द्वारा अभिव्यक्ति देते हुए ये लडके लिखने लगे। कोई कविता , कोई कहानी , कोई नाटक, कोई उपन्यास के माध्यम से अम्बेडकरी संस्कारों का मनोविश्व चितारने लगा। इसी नागसेन वन की देन है जीवन संघर्ष का विदारक चित्र खिंचनेवाला कहानीकार। उसने दलितों की दुनिया को एक अलग ढंग का अस्तित्व दिया। उसी का नाम है योगीराज वाघमारे।

स्वतंत्रता के बाद जिस विशिष्ट कालखंड के सोपानपर योगीराज वाघमारे कहानीकार के रूप में साहित्य जगत में आए , उस कालखंड की गतिविधीयों का जायजा लेते हुए हमें यह दिखाई देता है कि डॉ. अम्बेडकर की प्रतिभा से प्रेरित हुए और जिनके क्रांति गर्भ दर्शन से स्वाभिमान से जीने की उम्मीद लेकर पढे-लिखे दलित युवक देख रहे थे कि पढने-लिखने के बावजूद भी जातिय भावना हमारा पिछा नहीं छोडती। कदम-कदम पर अपमान बोया हुआ रहता है। शिक्षा से नई प्रतिती और जागृती आई लेकिन बेरोजगारी और उससे आई हुई अवहेलना खतम नहीं हो पाती यह आगतिकता उन्हें सताती थी। तो कुछ दलित युवक पढ लिखकर परिवार का रिश्तों का और समाज का इन्कार करते हुए दिखाई देते थे। समाज से जुडे रहे तो अपनी जाति लोग जान जाएंगे यह भावना उन्हें समाज से दूर ले जाती थी। झूठी प्रतिष्ठा की कल्पना से ये युवक जाति और उपनाम भी बदल रहे थे। स्वातंत्र्योत्तर कालखंड में ग्रामीण स्तर पर दलितों का सत्ता में सहयोग निभाने के सुचिन्ह दिखाई देने लगे लेकिन सिर्फ दलित व्यक्ति सरपंच भी हुआ तो उसकी चाय की प्याली अलग , उसे झंडा पहराने से दूर रखने का प्रयत्न , वह अपनी मर्जी से मतदान करने का अधिकार भी निभा नहीं पाता। बहिष्कार , अवहेलना और स्त्रियों पर होनेवाले अत्याचार तो रोज चल रहे थे। महाराष्ट्र में दलित जीवन का यह वास्तव योगीराज वाघमारे जी ने अपनी कहानियों में से पाठकों के सामने लाया। लेकिन ये दाहक अनुभव चित्रित करते हुए उन्होंने उन्हें अत्यंत संयमी एवं संयत ढंग से पेश किया। उनकी पेशगी में कहीं पर भी आक्रोश , छीज घिसाई दिखाई नहीं देती। उनकी संयमीत विन्यास के संदर्भ में डॉ. गंगाधर पानतावणे जी कहते हैं - उन्होंने अपनी कहानियों में दलित जीवन का अंकन अत्यंत संयमित ढंग से किया है। संयम चुभनेवाला होता है , काट खानेवाला होता है , अस्वस्थ करनेवाला होता है। घटनाओं में न फंसते हुए घटना के पीछे होनेवाले सच को ढूँढना ही वाघमारे जी के कहानी की गुणवत्ता है। ( लेणी , डॉ. गंगाधर पानतावणे , पृष्ठ-27 )

जिस कालखंड में योगीराज वाघमारे एक सशक्त कहानी लेखक के रूप में पाठकों के सामने आए वह समय दलित साहित्य का उत्कर्ष काल था। अनेक दलित लेखकों का साहित्य के प्रवाह में उदय हुआ और उन्हें मराठी साहित्य में मान्यता भी मिली। कई पुरस्कार , मानपत्र , मान मरातब इन लेखकों कों आकर्षित करने लगे और उन्होंने अपनी लेखनी प्रसिद्धी की दौड में अलग मार्ग पर चलाई। लेकिन हमें यह दिखाई देता है कि योगीराज वाघमारे एक ऐसे लेखक है

जिन्होंने अपनी संपूर्ण साहित्य यात्रा में अब तक अम्बेडकरी विचारों का लिया हुआ व्रत कभी भी नहीं तोडा। साथ ही उन्होंने निरंतर वर्तमान का ध्यान रखकर नवसमाज निर्माण का पुरस्कार किया है।

योगीराज वाघमारे अम्बेडकरी विचारों से ईमान और वर्तमान का ध्यान रखनेवाले लेखक है इस बात के प्रमाण हमें उनकी हर रचना में मिल जाते हैं। उन्होंने कुछ उपन्यास भी लिखे है लेकिन उनकी पहचान मुख्यत:कहानीकार के रूप में ही है। ' उद्रेक '

' बेगड ' और ' गुडदाणी ' ये उनके तीन प्रमुख एवं महत्वपूर्ण कहानी संग्रह है। उसके उपरांत उनका कहानी लेखन आज तक निरंतर जारी है। इन कहानी संग्रहों में संकलित एवं अन्य कहानियों में उन्होंने भूतकालीन घटनाओं में तल्लीन न होकर समकालीन वास्तवता को ढूँढ लिया है। यह वास्तवता की खोज ही उन्हें निरंतर अम्बेडकरी विचारों से जोडकर रखती है यह हम देख पाते हैं। योगीराज वाघमारे जी ने अपनी कहानियों के माध्यम से अम्बेडकरी विचार जगह-जगह पर बोया है। अम्बेडकरी विचार दलितों के जीवन की एक प्रेरक शक्ति है। इसी विचार से ही दलित समाज ने अपना अपमानित जीवन त्यागकर स्वाभिमानी जीवन का स्वीकार किया है। अपने समाज के उद्धार के लिए डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर जी ने अपना जीवन और सर्वस्व दांव पर लगाया और दलित समाज को नव संजिवनी दिलाई। उन्होंने अपने समाज के लिए जागृति अभियान छेडते ही गुलाम को इस बात का अहसास करा दो कि वह गुलाम है ताकि वह विद्रोह पर उतर आएगा। यह गर्जना की। समाज को अस्पृश्यता की दाहकता का अहसास कराने के लिए अस्पृश्यों की कई प्रथा-परंपराएँ , रश्म-रिवाज , आचार-विचारों की धज्जियाँ उडाई। अस्पृश्यों की जीवन पद्धति याने कि सवर्णोद्वारा उन पर थोपी गई गुलामी है। यह उन्होंने समझाया। उन्हें बताया कि अस्पृश्यता की पहचान करानेवाले रस्म-रिवाज , प्रचलित कल्पनाएँ , आचार , व्यवहार छोड दो। साथ ही यह मूलमंत्र भी दिया कि ' शिक्षित बनो .... संघटित रहो ....संघर्ष करों। ' उन्होंने आवाहन किया कि अस्पृश्यों को अत्यंत हीनतर जीवन जीने के लिए मजबूर करनेवाली प्रथाएँ , व्यवसाय , पवनी के हक में आनेवाले काम , पवनी प्रथा एवं वतनदारी छोड दो। अम्बेडकर ठणकाकर बताते थे कि अस्पृश्यों के व्यवसाय उनके जाति की पहचान है। जब तक वे ये व्यवसाय नहीं छोडेंगे तब तक उनके गले में लटका हुआ अस्पृश्यता का फांस नहीं छुटेगा। इतना ही नहीं अस्पृश्य समाज की महिलाएँ कौनसे गहने पहने , उनका लिबास ( पहनावा ) कैसा हो इस संदर्भ में मार्गदर्शन भी किया। पवनी के हकदार के रूप में किया जानेवाला झाडबुहार , मरे हुए जानवरों को खींचकर ले जाना , मृत जानवरों का मांस भक्षण करना आदि बातों को छोडने का आवाहन डॉ. अम्बेडकर जी के विचारों पर अमल किया और उनके जीवन में नया परिवर्तन आया। उन्हें सम्मान की जिंदगी मिली। इतना ही नहीं तो अस्पृश्यता का ध्वंस कर अस्पृश्य समाज की सवर्णो के बराबर अधिकार दिलाने के लिए सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक आंदोलन छेडे। महाड का संग्राम , मंदिर प्रवेश , गोलमेज परिषदों में सहभागिता , संविधान सभा में सहभागिता एवं धर्मांतरण ये डॉ. अम्बेडकर द्वारा चलाए गए आंदोलन है। इन्हीं गतीविधियों से उन्होंने अस्पृश्यों को स्वतंत्र भारत के नागरिक के रूप में समान अधिकार प्रदान किए।

योगीराज वाघमारे जी अपने साहित्य में डॉ. अम्बेडकर जी के उपरोक्त विचारों को ही पिरोते हैं। उन्होंने अम्बेडकरी विचारों की राह कभी नहीं छोडी। अम्बेडकरी विचारों को पिरोना ही उनके साहित्य का मुख्य उद्देश्य है। उनकी पहली कहानी ' उद्रेक ' इस बात का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है। ऊपरी तौर पर देखा जाए तो यह कहानी दलित युवकों के बरोजगारी की लगती है। लेकिन यह कहानी आत्मसम्मान से जीने की है। ' उद्रेक ' कहानी सिर्फ शेटीबा के आगतिक मन की कथा नहीं है तो पवनी प्रथा के किचड में धँसा हुआ और उसी में जीवन की सार्थकता माननेवाला उसकापिता

शेकु की भी है। मॅट्रिक पास शेटीबा कई जगहों पर सिपाही वॉचमन या तत्सम नौकारियाँ ढूँढता रहता है लेकिन उसे नौकरी नहीं मिलती। अंत में उसका बाप शेकू छोडा हुआ पवनी प्रथा का हक वापस माँगता है। लेकिन शेटिबा पवनी प्रथा के काम का इन्कार करते हुए ढोकी के चिनी के कारखाने में मलफेन उठाने का काम स्वीकृत कर लेता है। सच तो यह है कि शेकू ने पवनी प्रथा का हक शेटीबा के कहने पर ही छोडा था। लेकिन शेटीबा को नौकरी न मिलने की स्थिति में वह सभी महारों की पंचायत बुलाकर अपना छोडा हुआ पवनी प्रथा का हक फिर से माँगता है क्योंकि अपनेपरिवार की दूरावस्था दूर करने के लिए उसके सामने अन्य कोई उपाय नहीं होता है। यहाँ लेखक ने सुशिक्षित बेरोजगार होनेवाले दलित युवक के परिवार की दूरावस्था का अत्यंत विदारक चित्रण किया है। आगतिक बना हुआ शेकू जाति पंचायत के सामने मिन्नते करते हुए कहता है कि - अब हमारी परेशानी हो रही है। दो-दो दिन तक अन्न नहीं मिलता, अत: उसकी नौकरी का भरोसा नहीं रहा इसलिए तुम्हारे शरण आया ..... कुछ भी करके हमारा पवनी प्रथा का हिस्सा फिर से हमें दो। मैंने शेटीबा का सुनकर पवनी प्रथा का हक छोड दिया। गलती हो गई मेरे शेटीबा को जोड देता हूँ पवनी प्रथा में। ( उद्रेक – योगीराज वाघमारे पृष्ठ-108 ) यह वाक्य सुनते ही शेटीबा आग बबुला हो गया। वह कुछ समझ नहीं पा रहा था। हमने अम्बेडकरी विचारों की प्रेरणा से छोडी हुई पवनी की प्रथा फिर से हमारे तकदीर में आएगी इसलिए वह अत्यंत अस्वस्थ हो जाता है। अचानक आकाश में बिजली कौंधे और कडकड करती हुई बारिश की बौछार में शराबोर केले के पेडपर गिरे .... उसी प्रकार शेकू के अनपेक्षित विचार से शेटीबा को हुआ। उसे ऐसे लगा कि हजारों टन का बोझ अपने शरीर पर रखा गया है , हम उसके नीचे कुचलते जा रहे हैं। उसके पिता जी का एक-एक शब्द उसे हथौडे के प्रहार जैसा लगने लगा। ( उद्रेक – योगीराज वाघमारे , पृष्ठ-108 ) लेकिन पिताजी के इस निर्णय का वह गजब का विरोध करते हुए कहता है - तो..... फिर मैं इस घर में नहीं रहूँगा। और सुबह उठकर ढोकी के कारखाने पर जाते हुए वह माँ को खबर देता है कि कारखाने पर जो मिलेगा वह काम करूंगा , मलफेन ढोने का भी। (उद्रेक – योगीराज वाघमारे , पृष्ठ-110 )

वस्तुत: शेटीबा के द्वारा कारखाने पर स्वीकृत किया गया मलफेन ढोने का काम भी वैसे प्रतिष्ठा का नहीं था , लेकिन वह पवनी प्रथा के कामों से श्रेष्ठ है क्योंकि वह शेटीबा के जाति का व्यवसाय नहीं है। पवनी प्रथा के काम से उसकी जाति सब लोग पहचानेंगे और वह फिर से जाति के दुष्टचक्र में फँस जाएगा। शेटीबा यह चक्र भेदकर बाबासाहब के संदेश पर अमल करता है। क्योंकि डॉ. अम्बेडकर जी ने अपने समाज को यह संदेश दिया था कि पवनी प्रथा के व्यवसायों का त्याग करों। क्योंकि पवनी प्रथा एक भयंकर बिमारी थी। वह एक प्रकार की गुलामी ही थी। बाबासाहब के अनुसार , वतनदारी के कारण सारा अस्पृश्य समाज स्वाभिमान शून्य बना है। लाचारी और आगतिकता का शिकार हुआ है। वतन के कारण महार स्वाभिमान शून्य हो गए है। स्वाभिमान की दृष्टि से यदि वतन के ओर देखा जाय तो उसमें कोई अनिष्ट बात हो तो वह पवनी प्रथा है। महारों का मुशायरा पवनी के हक के रूप में दिया जाने के कारण महार वतन को अत्यंत गंदा और घृणित रूप प्राप्त हुआ है। पवनी का हक माने वेतन ऐसा जो महारों का और लोगों का खयाल था वह वैसे न होते हुए पवनी का हक याने भीख और महार याने भिखारी ऐसा दोंनो पक्षों का खयाल बन गया है। ( बहिष्कृत भारत : अग्रलेख , डॉ. बाबासाहब आंबेडकर दिनांक 16-09 - 1927) महत्वपूर्ण बात यह है कि पवनी की प्रथा के तहत किए गए कामों से मिलनेवाले पवनी के हक के कारण अस्पृश्य समाज स्वाभिमान शून्य बन गया है। इसीलिए आंबेडकरी प्रेरणा से सजग शेटीबा पवनी की प्रथा के काम का इन्कार करते हुए गंदगी में मलफेन उठाने का काम अपनाता है क्योंकि वहाँ पर काम का दाम के रूपमें वेतन मिलेगा और किसी के सामने लाचार नहीं बनना पडेगा।

इसीलिए शेटीबा के परंपरागत व्यवसाय को नकारने की कृति को आंबेडकरी आंदोलन का और डॉ. आंबेडकर के विचारों का तात्विक आधार है। और इस परंपरा के इन्कार से ही स्वाभिमान से जीवन जीने का रास्ता निकलनेवाला है। डॉ. अम्बेडकर जी के विचारों पर शेटीबा का दृढ विश्वास है। इस संदर्भ में राजा ढाले जी ने ' गुडधानी ' कहानी संग्रह की प्रस्तावना में लिखा है कि - ' शेटीबा का असली उद्रेक इस जाति प्रथा के विरुद्ध है। इससे बाहर निकलने का रास्ता एक ही है और वह इन पारंपारिक व्यवसायों से अपने आप को विभक्त कर देना। और यह करने के लिए वह पारंपारिक व्यवसाय से अपना उच्छेद कर ले रहा है। और यह प्रेरणा उसको जैसे डॉ. बाबासाहब आंबेडकर के आंदोलन से मिली है वैसे ही उनके दर्शन से भी मिली है। याने कि डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर जी के महार वतन के विरुद्ध किए गए आंदोलन के पीछे महारों का आर्थिक गतिरोध यह प्रमुख कारण नहीं था बल्कि महारों में आई हुई स्वाभिमान शून्यता ही प्रमुख कारण था। ' ( गुडधानी , योगीराज वाघमारे , प्रस्तावना , पृष्ठ- 9 ) इसीलिए चीनी के कारखाने का मलफेन सर पर ढोने की शर्म शेटीबा को नहीं लगती अर्थात जिस व्यवसाय के कारण हम गुलाम के रूप में पहचाने जाते हैं उस पवनी की प्रथा का इन्कार करनेवाला शेटीबा नए युग का सिपाही है। उद्रेक कहानी का सिर्फ शेटीबा ही नहीं तो संपूर्ण समाज ही उसके रूप में नवयुग की भाषा बोलता है।

भारतीय समाज व्यवस्था में धर्मव्यवस्था के द्वारा थोपी गयी मानसिक परतंत्रता से मानसिक स्वतंत्रता की ओर लोगों की यह सफर योगीराज वाघमारे जी की ' उद्रेक ' कहानी के साथ ही लग्न , बंड , परागंदा , मला जायलाच पाहिजे आदि कहानियों में महसूस होती है। नवजीवन की नयी चुनौतियाँ निभाने की तैयारी इन कहानियों के अनेक व्यक्तियों में है। और उसका आधार डॉ. अम्बेडकर जी के विचार और अम्बेडकरी आंदोलन है। सिर्फ महार समाज ही नहीं तो यह परिवर्तन का विचार अन्य अस्पृश्य जाति के सुशिक्षित नवयुवाओं ने अपनाया है। लग्न कहानी ऐसी ही है। औरंगाबाद के मिलिंद महाविद्यालय में पढा हुआ दाजी मांग का लडका लक्ष्मण पढाई खत्म होने के बाद अम्बेडकरी विचारों की विरासत लेकर गांव में आता है और जाति के लोग एवं रिश्तेदारों के विरोध की पर्वा न करते हुए अपना विवाह बौद्ध धम्म पद्धति से कराता है। अपने समाज को वह बाबासाहब के द्वारा बताए गए स्वाभिमान का मार्ग दिखाता है - मैं ब्राम्हणों से विवाह नहीं करवाऊँगा और महार अब महार नहीं रहे वे बौद्ध बन गए है। किसी पर निर्भर नहीं है। उन्होंने विवाह में ब्राम्हण की आवश्यकता ही नहीं रखी। स्वयं विवाह करते हैं। बौद्ध भिक्खु बुलाते है। हम भी वैसा क्यों ना करे। ( लग्न , योगीराज वाघमारे निकाय एप्रिल 76 ) ' मला जायलाच पाहिजे ' कहानी में दो भिन्न प्रवृत्ति के दो सुशिक्षित भाईयों की मानसिकता का अंकन किया है। सदाशिव अपने लिए विचार करनेवाला और अपनी ग्रहस्थी में मशगुल है लेकिन अरुण सामाजिक अहसास से अभिभूत मुंबई जैसे शहर में नौकरी करते-करते सामाजिक प्रतिबद्धता की भावना से अम्बेडकरी आंदोलन से जुडा रहता है। पँथर का कार्यकर्ता होने के कारण वह दंगाफसाद में गिरफ्तार हो जाता है। लेकिन इस बात का उसके पिता जी जानबा कांबळे को बूरा नहीं लगता उल्टे उसे अभिमान महसूस होता है। सदाशिव को लगता है कि अरुण ने अपने पिताजी के नाम पर कालिख पोत दी है। लेकिन जानबा अपने बडे बेटे की प्रतिक्रिया पर संतप्त होकर झल्लाता है - कैसी का कालिख ? अरुण ने ऐसा क्या किया जिससे मेरे नाम पर कालिख लगी है - बोलो , कैसी कालिख ? ..... अरे अरुण ने किया वही अच्छा किया। उसका कलेजा शेर का था इसीलिए वह वैसे कर पाया और तूने क्या किया ? ( गुडदाणी , मला जायलाच पाहिजे , योगीराज वाघमारे , पृष्ठ -39 ) और बेटा गिरफ्तार हो गया है यह खबर पानेवाला बूढा बाप तुरंत सदाशिव के प्रति घृणा व्यक्त करते हुए अरुण के ओर जाने को निकलताहै क्योंकि अपने जुझारू बेटे की

पत्नी और असकी कोख से जन्म लेनेवाले भिमसैनिक की फिक्र उसे लगी है फिर अब मुझे जाना ही चाहिए शेरनी की कोख से शेर जन्म लेनेवाला है ना। (गुडदाणी, मला जायलाच पाहिजे , योगीराज वाघमारे , पृष्ठ-40)

' सूर्योदय ' भी ऐसी ही अम्बेडकरी विचारों की बोआई करनेवाली कहानी है। बाबासाहब ने सभी दलित शोषितों को मूलमंत्र दिया था कि ' शिक्षित बनो , संघटित रहो , संघर्ष करो। ' योगीराज वाघमारे जी अम्बेडकर जी ने दिया हुआ शिक्षा का संदेश दूर-दूर तक पहुंचाते हुए दिखाई देते हैं। सूर्योदय ऐसी ही कहानी है। घुमंतू जातियों के लिए अब शिक्षा के अलावा कोई विकल्प नहीं है यह सोचकर राठोड गुरुजी निवासी स्कूल खोलते है और घुमंतू जाति के लोगों को जागृत करते हैं। इस समाज में शिक्षा के बारे में उदासिनता थी। लोग अपने बच्चों को स्कूल में भेजने को तैयार नहीं है। कई जातियों के बच्चे अपना परंपरागत व्यवसाय करते हुए घुमनेवाले अपने परिवार के साथ घुमते है उनको स्कूल में जाने का अवसर नहीं मिलता ऐसी जातियों के बच्चों को मिलाकर राठोड गुरुजी निवासी स्कूल का आरंभ करते हैं। वे प्रत्यक्षत: बस्ती-बस्ती , रावटी-रावटी पर जाकर बच्चों को इकट्ठा करते हैं। राठोड गुरुजी इस कहानी में हमे कर्मवीर अण्णा की याद दिलाते हैं। निम्नलिखित संवाद से इसकी प्रतिती होगी ।

'तुम्हे लडके कितने हैं ? ।
' क्यों तुम्हे क्या करना है ? ।

मुझे एक दे दो। उसे स्कूल में डालता हूँ। छात्रावास में रखता हूँ।' लडके का बाप लडके को झट से रावटी में छिपाता था।

' हमें नहीं पढना ! ।
' क्यों ? ।
' क्यों याने ? मेरी मर्जी ..... ।

अब तक तेरी ही मर्जी थी। बच्चे को पेटभर खाना मिला ? तुम्हे मिला .....? '
( बहिष्कार , सूर्योदय, योगीराज वाघमारे , पृष्ठ-13 )

उपरोक्त संवाद से हमे यह दिखाई देता है कि राठोड गुरुजी अपनी जाति बिरादरी से भी लढ रहे थे। राठोड गुरुजी सिर्फ इन बच्चों को नहीं पढाते बल्कि वे उनके माता-पिताओं को अम्बेडकर ने बताया हुआ आत्मसम्मान का रास्ता भी दिखाते हैं। उनके निवासी स्कूल में पढनेवाले उज्जैन के चिडिमार पिताजी बाज्या जब छुट्टी मिलने पर शाम को अपने बेटे को ले जाने आता है तब राठोड गुरुजी उसे रुकने को कहते हैं और अंधेरी रात में घुमने की बहेलिया जाति की प्रथा तोड देते हैं। जब बहेलिया बाज्या यह कहता है कि हम बहेलिया का जन्म ही ऐसा है।अंधेरी रात में आना और अंधेरी रात में जाना। बेटे को गाय के पीठ पर बिठाता हूँ और रात में ही रावटी पर पहुंचता हूँ। ( बहिष्कार, सूर्योदय , योगीराज वाघमारे , पृष्ठ-19 ) तब राठोड गुरुजी उसे ताकिद करते हैं - आज से ऐसा व्यवहार करो जैसे उजाला हो गया हो ... रहना ...जीना ....उज्जैन पढने के बाद तुम्हे सब बताएगा। ( बहिष्कार , सूर्योदय , योगीराज वाघमारे , पृष्ठ-20 ) इसके बाद

निवासी स्कूल में निवास करनेवाला उज्जैन का बाप उजाले में निश्चिंत होकर सोया था असकी करवट में उज्जैन लेटा था। यही उनके जीवन का सूर्योदय था।

योगीराज वाघमारे जी की हाल ही में प्रकाशित कहानी पर्याय भी अम्बेडकर जी की वैचारिक परंपरा से रिश्ता जोडनेवाली कहानी है। महापुरुष के पुतले की खिल्ली उडाई जाने के कारण शहर में ऊधम मच जाता है और सारा शहर आतंकीत हो जाता है। दलित समाज के युवक मोर्चे में शामिल होकर घर में पहुँच ही रहे थे इतने में पुलिस कोबिंग ऑपरेशन कर इन बच्चों को मार पीट कर गिरफ्तार करते हैं। इतना ही नहीं तो दलितों की बस्ती के वृद्ध एवं महिलाओं को पीटते हैं। ऊधम कम हो जाता है और सभी सामाजिक राजनैतिक संघटनों की ओर से शांती का आवाहन किया जाता है। संचार बंदी खोल दी जाती है। अम्बेडकर नगर में सारे सफाई मजदूर जमादारिन फुलन के आदेश से अघोषित हडताल पर जाते हैं। शहर में चारों ओर गंदगी फैल जाती है और हडतालवालों के विरोध में चर्चा शुरू हो जाती है। यह भी कहा जाता है कि हडताल कुचलनी चाहिए लेकिन जमादारिन फुलन अपने सहयोगियों को काम पर जाने नहीं देती थी। जब ए सारे लोग फुलन के सामने आकर यह बताते हैं कि लोग यह चर्चा कर रहे है कि यह हडताल तोडनी चाहिए तब फुलन उन्हें समझाकर कहती है कि- और दो दिन काम पर मत जाओ। एक जुट बनकर रहो। हमारे पास ऊधम से भी अधिक महाभयंकर हाथियार है। ऊधम से जो नुकसान होता है उससे हजार गुना हाहाकार मचाने की ताकद हमारे पास है। आदमी ने फैलाई हुई गंदगी , दुर्गंध उसी की जान लेती है ... हम भी एक दाँव खेलेंगे। अन्याय, अत्याचार का बदला लेंगे। ( पर्याय , योगीराज वाघमारे पृष्ठ-6) पाठकों को लग सकता है कि यह कहानी प्रतिशोध की कहानी है। लेकिन हमें यह दिखाई देगा कि यह कहानी अम्बेडकर जी के बताए गए मार्ग का अनुसरण करती है। जब तक दलित समाज बहिष्कार का प्रयोग नहीं करेगा तब तक सवर्ण उनके काम का मोल और महत्व नहीं समझ पायेंगे। गंदगी उठाने का काम वैसे हीन दर्जे का माना जाता है लेकिन यह काम करनेवालों ने उसका इन्कार किया तो यह गंदगी जानलेवा शाबीत हो सकती है यह जब सवर्ण और प्रतिष्ठित समाज समझ जाएगा तभी उनका दृष्टिकोण बादल जाएगा। डॉ. अम्बेडकर जी ने इसी पद्धति का संदेश महाड के चर्मकार समाज के स्त्री पुरूषों को दिया है। महाड में सत्याग्रह परिषद के कारण चर्मकार समाज खडबडाकर जाग ऊठा और शाम को चमारों के मुहल्ले में सभा का आयोजन किया गया इसलिए अम्बेडकर जी को सभा में आने की प्रार्थना की गई। उस सभा में दिए गए भाषण में अम्बेडकर जी ने कहा - सच कहा जाय तो आप लोग खुशहाल , व्यवसायी , अमीर हो। आप लोग जुते न देने का सत्याग्रह कर सकते हो। यह सामर्थ्य तुम्हारे समाज में होकर भी तुम उसका उपयोग नहीं करते। उसको तुम्हारी लापरवाही कहा जाय या अजीब सुस्ती कहा जाय यही मेरे समझ में नहीं आता। तुम्हे ऐशोआराम चाहिए या इंसानियत चाहिए यह तय करो। इंसानियत के अलावा तुम्हारा ऐश्वर्य व्यर्थ है। (डॉ. भीमराव रामजी अम्बेडकर , खंड-3 , चां. भ. खैरमोडे , पृष्ठ- 182-183 ) डॉ.अम्बेडकर यहाँ बताते हैं कि अस्पृश्य जाति के लोग जो व्यवसाय करते हैं वे सवर्णो एवं खुशहाल लोगों के ऐशोआराम के लिए सेवा है। लेकिन सवर्ण उन्हें सम्मान एवं प्रतिष्ठा नहीं देते इसीलिए अस्पृश्यों को अपने व्यवसाय न करने का सत्याग्रह करना चाहिए ताकि सवर्णो के व्यवहार में परिवर्तन आएगा और वे अस्पृश्यों के साथ सम्मान का व्यवहार करेंगे। पर्याय कहानी की नायिका फुलन ठीक वही निर्णय लेती है और जब तक गिरफ्तार किए गए बच्चों की मुक्तता नहीं होती तब तक काम पर न जाने के निर्णय पर अटल रहने का आवाहन सहयोगियों से करती है।

योगीराज वाघमारे जी की कहानी बंड भी ऐसी ही अन्याय का प्रतिकार करनेवाली है। यह कहानी बाल मनोविज्ञान पर आधारित है। छोटे बच्चों का मन अन्याय के विरोध में विद्रोह करता है उसमें भी दलित बच्चे के मन की गठन अलग

ही होती है। उनके मन में अन्याय के विरोध में चिढ होती है , गुस्सा होता है , अपमान का भाव रहता है और अपने सुरक्षा की परवाह होती है। बंड कहानी के सटवा महार का शाजी एक ऐसा ही स्कुली बच्चा है। उसे उसके गाँव के सवर्ण बच्चों द्वारा महारग्या , महारग्या कहकर चिढाने पर उसका दिल दहलता था। एक बार तो उस पर अपनी बिमार माँ के लिए पटेल की हवेली से छाछ रोटी लेकर जाते हुए स्कूल के बच्चे बिगडकर हमला करते हैं। उसके हाथ से छाछ रोटी रास्ते पर फेंक देते हैं और शाजी रोता हुआ बैठ जाता है। लेकिन यह सब कुछ चुपचाप सहनेवाला शाजी एक बार विद्रोह पर उतर आता है। एक बार शाजी के पिताजी उसे दुकान से बिडिया लाने के लिए कहते हैं। बिडिया लेकर आते समय उसकी कक्षा के वही शरारती बच्चे उसे रोककर मारपीट करने लगते है तब उसका मन विद्रोही बन जाता है और वह शरारती बच्चों पर टूट पडता है। शाजी कहता है मेरा सर गरम हो गया ....क्या और कैसे वह समझ में नहीं आया। मैंने शरीर की सारी शक्ति जुटाई और भिकू के हाथ को गुस्से के साथ जोर से काट लिया। उसके हाथ का खून मेरे दाँतो में जम गया। मुझे क्रोध आया। भिकू घबरा गया। मेरे अनपेक्षित काटने से वह तिलमिलाकर चिल्लाया , बोंब मारी ... मैंने उसके तरफ ध्यान नहीं दिया। तुरंत उसके हाथ से दंडा खींच लिया और सटासट बच्चों को मारने लगा। मैं उस हर एक को पीट रहा था जो दिखाई दे। अपने आप के इर्द-गिर्द घूम रहा था। दंडा चक्र की तरह घुमा रहा था। दाँत पिसकर भूताविष्ट होकर बच्चों का पिछा कर रहा था। इतने दिन का प्रतिशोध ले रहा था और बच्चे दूम दबाकर गुरव मुहल्ले में जोर से भाग रहे थे। (उद्रेक , बंड , योगीराज वाघमारे , पृष्ठ - 84 ) यह कहानी स्कुली बच्चों के बीच के झगडों की लगती है फिर भी वह अन्याय के विरोध में किए गए प्रतिकात्मक विद्रोह की है। इस संदर्भ में डॉ. गंगाधर पानतावणे जी कहते है। यह विद्रोह यदि प्रतिकात्मक रूप में कुछ बच्चों के विरोध में किया गया है फिर भी अन्याय करनेवाली समाज व्यवस्था के विरोध में ही विद्रोह है। अन्याय और अवहेलना की जब परिसीमा होती है तब उसे उठाकर फेंकने की अनामिक शक्ति कमजोरों में जाग उठती है। ( लेणी , डॉ. गंगाधर पानतावणे , पृष्ठ-98) साथ ही यह कहानी डॉ. अम्बेडकर जी की वैचारिक परंपरा बतानेवाली है। बाबासाहब कहते थे अन्याय करनेवाले से अन्याय सहनेवाला अधिक दोषी होता है। मनुष्य को अन्याय का प्रतिकार करना चाहिए। डॉ. अम्बेडकर कहते थे - वस्तुत देखा जाय तो इस अन्याय के सामने हमने गर्दन झुकायी। इसीलिए वह आज तक चल रहा है। उसे उखाडकर फेंक देने का हमने दृढ निश्चय किया तो उसे कोई भी हम पर थोप नहीं सकता। ( बहिष्कृत भारत , 25 नोव्हेंबर , 1927 ) अस्पृश्यता का उच्चाटन करने के लिए डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर जी ने ' बहिष्कार योग 'और ' प्रतिकार योग ' ये दो उपाय बताए है। बहिष्कार योग और प्रतिकार योग का अमल नहीं किया गया तो स्पृश्य समाज अस्पृश्यता के संबंध में विचार नहीं करेगा। उन्हें विचार प्रवृत्त करने के लिए दलित समाज को इन उपायों का अवलंब करना चाहिए यही योगीराज वाघमारे जी ' पर्याय ' और ' बंड ' कहानी के माध्यम से बताते हैं।

योगीराज वाघमारे जी की उपरोक्त कहानियों का परामर्श लेने पर हमें यह दिखाई देगा की लेखक अपनी समग्र सृजन यात्रा में अम्बेडकरी विचारों का प्रचारक बन गया है। उनकी हर कहानी अम्बेडकर जी का एक नया विचार लेकर आती है। यही सुत्र उनके क्षितीज नामक लघु उपन्यास में दिखाई देता है। क्षितीज का नायक अशोक अपने समाज के स्वजनों को सामूहिक खेती का पाठ पढाता हुआ दिखाई देता है। एम. एस्सी. अॅग्री तक पढनेवाला अशोक छुट्टियों में गाँव आता है और वहाँ महारों के वतन में मिलीहुई जमीन का विवाद गाँववालों के साथ छीड जाता है। गाँव में सुख सुविधाएँ लाने के लिए सरकार अस्पताल एवं बिजली का केंद्र बनाने के काम को अनुमोदन देती है। इसके लिए गाँववाले गाँव की जमीन

दे यह प्रस्ताव तहसीलदार गाँववालों के सामने ग्राम सभा में रखते हैं। तब गाँववाले यह सिफारिश करते हैं कि दलितों के पास जो बंजर जमीन है वह ली जाए। तब अशोक इस प्रस्ताव का विरोध करते हुए गाँववालों को बताता है - हम सामूहिक खेती करेंगे। मैं मेरे ज्ञान का उपयोग खेती के लिए करूंगा। ( भिमयुग , क्षितीज , योगीराज वाघमारे , पृष्ठ- 96 ) हमें यहाँ गौर करना चाहिए कि डॉ अम्बेडकर जी ने खेती विषयक अपने विचार व्यक्त करते हुए सामूहिक खेती एवं शासकीय समाजवाद का पुरस्कार किया हुआ दिखाई देता है। यह विचार वे अशोक के माध्यम से इक्कीस्वीं सदी के प्रारंभिक दौर में ले आते हैं।

योगीराज वाघमारे जी का अम्बेडकरी विचारों पर दृढ विश्वास है यह हमें उनकी कहानियों के पात्रों के व्यवहार से दिखाई देता है इसीलिए ही उनके पात्र समाज से रिश्ता तोडनेवाले एवं अम्बेडकरी विचारों की प्रतारणा करनेवालों की निंदा करते हैं। ऐसे लोग समाज के तिरस्कार के धनी बने हैं। यह हमें ' माझ चुकल'की पढी लिखी बहु , ' बेगड ' का प्रकाश , ' पराभव ' का सुशिक्षित साने , ' मला जायला पाहिजे ' का सदाशिव इन पात्रों से दिखाई देता है। प्रकाश, साने , सदाशिव और बहू ये पात्र पढे लिखे होकर वे सफेद पोश वातावरण में जीवन व्यवहार करते हुए दिखाई देते हैं। संतुष्ट वृत्ति से जीवन यापन करनेवाले इन लोगों को सामाजिक गतीविधियों से कोई लेना-देना नहीं है। वाघमारे जी ने उनका आत्ममग्न मनोवृत्ति को तीखे ढंग से बेनकाब किया है। महाविद्यालय में पढनेवाला अपना बेटा ज्ञानुबा के लिए सुशिक्षित , समझदार पत्नी मिले इसलिए देवा कांबळे नई सगाई तय करता है। लेकिन ज्ञानुबा की सुशिक्षित पत्नी शालिनी अपने सास ससूर जी का और ज्ञानुबा के रिस्तेदारों का सम्मान नहीं करती। उनके साथ बैठना उठना अथवा सार्वजनिक कार्यक्रमों में जाना उसे पसंद नहीं है। एक बार ज्ञानुबा के घर जाने पर ज्ञानुबा माँ के लिए नई साडी लाता है लेकिन यह शालिनी को अच्छा नहीं लगता वह झगडा करके मायके में जाने के लिए निकलती है तब ज्ञानुबा के माता-पिता पश्चातापदग्ध होते हैं और बेटे का घर छोड देते हैं। तब देवबा सुध-बुध खोकर पश्चाताप से बडबडाता है और अपनी पत्नी को कहता है - बुढिया हमने बहुत बडी गलती की ....गलती की। देवबा की मानसिकता का वर्णन लेखक ने अत्यंत सूचकता से किया है। जैसे देवबा के सुखस्वप्नों की मंझील जलकर खाक हो गयी .... आशा आकांक्षाओं की धज्जीयाँ हवा में उड गई...देवबा को ऐसे लगा की हम तुफान में खडे है और मेरी ही गलती हो गई कहते-कहते देवबा ठोकर खाकर घर के बाहर निकला। ( उद्रेक, माझ चुकल,योगीराज वाघमारे, पृष्ठ -30) हम कहानी में देखते है कि देवबा का यह उद् वेग अपनी मानव द्वेषी बहु का तिरस्कार करता है। ' मला जायला पाहिजे ' कहानी का सदाशिव भी ऐसे ही पिताजी के तिरस्कार का विषय बन गया है। मुंबई में नौकरी करनेवाला उसका भाई अरुण पँथर का कार्यकर्ता है। एक बार फसाद में गिरफ्तार हो जाने पर उसने पिताजी के मुँह पर कालिख पोत दी कहते हुए सदाशिव गुस्से में चिल्लाता है तब उसके पिताजी जानबा बिगडकर कहता है - कैसी कालिख पोती है बताओ कैसी कालिख ? अरुण ने ऐसा क्या किया है जिससे मेरे नाम पर कालिख लग गई है , बोलो कैसी कालिख ? इससे आगे निकलकर लेखक जानबा की अवस्था का चित्रण करते हैं- उसने मुटठी कस ली दाँत ओठ चबाए।' अरे अरुण ने जो किया वही अच्छा किया वह शेर दिल था इसलिए वह वैसे कर पाया और तुने क्या किया ....? जानबा के चेहरे पर सदा के प्रति घृणाभाव स्पष्ट दिखने लगा। ( गुडदाणी , मला जायला पाहिजे , योगीराज वाघमारे , पृष्ठ-39) । बेगड ' ऐसी ही योगीराज वाघमारे जी की प्रसिद्ध कहानी है। दलित समाज के युवाओं को डॉ. अम्बेडकर की वैचारिक क्रांति के कारण शिक्षा का अवसर मिला और उन्हें सरकारी कार्यालयों में नौकरियाँ मिली। लेकिन अनेक पढे लिखे उच्चपदस्थ अधिकारी अम्बेडकरी विचारों से

दूर गए। झूठी प्रतिष्ठा के पीछे दौडते हुए उन्होंने अम्बेडकरी आंदोलन की हानि हो गयी है। और इस अधिकारी वर्ग ने समाज से रिश्ता तोड दिया। ऐसा ही एक युवक याने बेगड कहानी का नायक प्रकाश है। शिक्षा पूरी होते ही उसे नौकरी मिलती है और वह चार दिन की छुट्ठी लेकर गाँव में आता है। विठोबा उसे लेने के लिए उपलाई के बस अड्डे पर जाता है और घर लेकर आता है। लेकिन वह महसूस करता है कि प्रकाश के व्यक्तित्व में काफी परिवर्तन आया है। घर में आने के बाद विठोबा देखता है कि प्रकाश अब बहुत ही एकांतप्रिय आत्मकेंद्री बन गया है। उसे अपने माँ-पिता एवं भाई-बहनों के प्रति तनिक भी ममता नहीं है और उसने समाज के साथ रिश्ता तोड दिया है। वह न उधो का लेना न माधो का देना इस वृत्ति से व्यवहार करता है। इसलिए अम्बेडकरी आंदोलन के बारे में और बौद्ध धम्म के बारे में उसे कुछ भी जानकारी नहीं है। दो दिन में ही प्रकाश जब औरंगाबाद जाने के लिए निकलता है तब उसे देखते हुए विठोबा को लगता है - बैल की पुजा करने के त्योहार में बैलों को सजाने के लिए फुंदने , झुल , तोडे , घुंघरू , कंठा,घाँटी पहनाते है सींग पर पन्नी लगाते हैं। पन्नी का लेप चढाया तो सही रूप दिखने लगता है। प्रकाश पढा नौकरी मिल गयी लेकिन घर- बार , भाई-बहने , माँ-पिता समाज आदि के प्रति कर्तव्य से , अपनेपन से दूर जा रहा है। उसका व्यवहार याने पन्नी लगाए हुए सुनहरे – रूपहले सींग जैसा। ( बेगड , योगीराज वाघमारे , पृष्ठ - 99-100), 'मला जायला पाहिजे 'और 'बेगड ' कहानियाँ पढने पर यह दिखाई देता है कि दलित समाज के लोगों की अम्बेडकर के प्रति इतनी निष्ठा है कि अम्बेडकर के विचारों से प्रतारणा करनेवाला बेटा भी क्यों न हो वे उसकी पर्वा नहीं करते उपरोक्त कहानियों के प्रकाश और सदाशिव का तिरस्कार उनके पिताजी ही करते हैं।

योगीराज वाघमारे जी ने अम्बेडकरी विचारों से दलित समाज में आए हुए परिवर्तन का समग्र चित्रण किया है। उनके विचारों का अनुसरण करनेवाले पात्र जिस प्रकार उनकी कहानियों में है उसी प्रकार अम्बेडकरी विचारों की प्रतारणा करनेवाले पात्र भी हमें दिखते हैं एक प्रकार की यह आत्मपरिक्षण की प्रक्रिया ही है। इस संदर्भ में डॉ. गंगाधर पानतावणे जी कहते हैं- दलित आंदोलन और अम्बेडकरी विचारों से ज्वलंतता एवं जीवंतता जीनेवाले अनुभवों के चित्र वाघमारे जी ने जैसे खींचे है वैसे ही शिक्षा और उपाधी की झूल चढाकर पराभव का कोष बुननेवाले दुष्ट दलित मानसिकता का अत्यंत संयत ढंग से अंकन किया। इसीलिए ही हमें उनकी कहानियों में जिस प्रकार शेटीबा , अरुण , शाजी मिलते हैं उसी प्रकार ' माझ चुकल' की पढी लिखी बहु, बेगड का प्रकाश , पराभव का सुशिक्षित साने , मला जायला पाहिजे का सदाशिव ये भी मिलते हैं। प्रकाश , साने, सदाशिव , बहु ये सारे पढे लिखे लोग सफेदपोश वातावरण में संतुष्ट वृत्ति से जीनेवाले है, समाज में घटित घटनाओं से उन्हें कोई लेना-देना नहीं है। वाघमारे जी ने इस मनोवृत्ति का किया हुआ वस्त्रहरण तीखा है इसलिए वह एक प्रकार का आत्मपरिक्षण है। (लेणी , डॉ. गंगाधर पानतावणे , पृष्ठ -)

उपरोक्त विवेचन से हमें यह दिखाई देता है कि लेखक योगीराज वाघमारे जी का प्राण अम्बेडकरी आंदोलन है। इसीलिए वे अपने अनुभव विश्व का अंकन करते हुए अत्यंत संयत ढंग से सामाजिक वास्तवता का सामना करते हैं लेकिन कहीं पर भी अम्बेडकरी विचारों की अवहेलना होने नहीं देते। अवहेलना करनेवाले पात्र समाज के तिरस्कार का शिकार बन जाते है। इसी में उनके कलम की अम्बेडकरी विचारों के प्रति ईमानदारी दिखाई देती है।

दलित साहित्य के मूर्धन्य कहानिकार योगीराज वाघमारे जैसे अम्बेडकरी विचारों के प्रति प्रतिबद्ध रहे हैं। वैसे ही उन्होंने वर्तमान का ध्यान भी रखा है। दलित उत्थान के आंदोलन में शामिल सभी आंदोलन उनकी वैचारिकता एवं वस्तुस्थिति और भविष्यकालीन यात्रा आदि बातों को वाघमारे जी ने दर्ज किया है। अपने इर्द-गिर्द सावधानी से ध्यान

रखनेवाली योगीराज वाघमारे जी की कहानी अनुभव संपन्न तो है ही लेकिन वह प्रत्ययकारी भी है। दलित परिवारों में शिक्षित और अशिक्षितों के बीच का संघर्ष , शिक्षित , प्रौढ दलित युवतियों की मनोव्यथा , शिक्षा जैसे पवित्र क्षेत्र में अपमान और उपेक्षा भरा दलित शिक्षकों का जीवन, दलितों में आई हुए सफेद पोश वृत्ति ये सारे अनुभव वाघमारे जी की कहानी का विषय बनते हैं। संयत ढंग से जीवन संघर्ष का विदारक चित्र खिंचनेवाले वाघमारे नए दलित कहानी लेखकों का आशा स्थान है। (दलित कथा , दलित कथा काही विचार संपा. – डॉ. गंगाधर पानतावणे , प्रा. चंद्रकुमार नलगे , पृष्ठ-15 )